॥ ओ३म् ॥

चार सुधा

—महावीर सिंह "मुमुक्षु"

—यशपाल आर्यबन्धु

॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सदाचार सुधा

लेखक : { महावीर सिंह "मुमुक्षु"
यशपाल आर्यबन्धु

प्रकाशक :
आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी,
मुरादाबाद

मुद्रक :
आलोक प्रेस
डिप्टी गंज, मुरादाबाद

प्रथम संस्करण नवम्बर १९८१

मूल्य नहीं सहयोग चाहिये

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद की साहित्य प्रकाशन की अपनी अनूठी परम्परा है। विशेषता यह है कि यह अपने प्रकाशनों का मूल्य नहीं लेता, निःशुल्क वितरित करता है। इस पर भी आर्य समाज की यह चाहना है कि उसका साहित्य-प्रचार महायज्ञ अनवरत रूप एवं अबाध गति से चलता रहे। इसके लिये साहित्य-प्रेमी, उदार दानी महानुभावों के सात्विक सहयोग की अपेक्षा है। आर्य समाज आप से प्रस्तुत पुस्तक का मूल्य नहीं ले रहा, पर क्या आप निःशुल्क लेना पसन्द करेंगे ? यदि नहीं तो फिर आप आर्य समाज के साहित्य प्रकाशन यज्ञ में अपनी आहुति देकर साहित्य प्रचार में सहयोगी बन सकते हैं।

आगामी प्रकाशनों के लिये आपका सात्विक सहयोग सहर्ष स्वीकार्य होगा।

नोट : न्यून से न्यून दस रुपये सहयोग में प्रदान करने वाले महानुभावों ,का नाम आगामी प्रकाशन में कृतज्ञता पूर्वक प्रकाशित किया जायेगा। दस रुपये से कम राशि को सम्मिलित रूप से फुटकर दान के अन्तर्गत प्रकाशित किया जायेगा।

सहयोगाकांक्षी :

हरिवंश लाल कुमार — प्रधान
महावीर सिंह — मन्त्री
रामाश्रय लाल — कोषाध्यक्ष

राम प्रसाद गुप्त — प्रचार अधिष्ठाता
यशपाल आर्यबन्धु — प्रचार मन्त्री

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद

ओ३म्

प्रस्तावना

आदि काल से ही वैदिक ऋषिगण सदाचार की महिमा को बखानते चले आये हैं। पर भौतिकता की चकाचौंध में जब मानव ने अपना लक्ष्य ही खाना, पीना और मौज उड़ाना मान रखा हो तो फिर सदाचार की कौन पूछे ? आज मानव अपनी पुरानी सच्चरित्रता को खो बैठा है। परिणामस्वरूप सर्वत्र अनैतिकता का बोलबाला है। सदाचार को खो कर मानव अशांत और व्याकुल हो रहा है। अनैतिकता भरे इस वातावरण में नैतिकता का मार्ग सुझाने वाला भी (आर्य समाज के अतिरिक्त और) कोई दिखाई नहीं दे रहा। धर्म की हमने धर्म-निरपेक्षता के नाम पर तिलांजलि दे डाली है। वह चरित्र जो कभी मानवता का आधार माना जाता था, आज कहीं ढूँढने से भी नहीं मिल रहा। चरित्र के अभाव में मानवता जीवित भी रह सकेगी इसमें सन्देह है। हमारा विश्वास है कि यदि मनुष्य का चरित्र सुधर जाये तो समाज ही नहीं समस्त संसार सुधर सकता है। यदि मानव सदाचार की साधना कर सका तो धरा को स्वर्ग बना सकता है। कविवर मैथिली शरण गुप्त ने यूंही नहीं लिख दिया था कि—

"सुनो स्वर्ग क्या है ? सदाचार है।"

आर्यसमाज सदाचार को मानवता का शृंगार मानता है और चाहता है कि मानव फिर से सदाचार का पाठ पढ़े। हमारी मान्यता है कि विज्ञान के इस युग में मानवता पर सबसे बड़ा संकट यदि कोई है तो वह सदाचार का, चरित्र का ही संकट है। इस संकट से मानवता को उबारना आवश्यक है। इसी दिशा में आर्यसमाज

रेलवे हरथला कालोनी का यह छोटा सा प्रयत्न है। एक अनुभवहीन लेखक अपने प्रथम प्रयास में कितना सफल हुआ है, इसका निर्णय तो विज्ञ पाठक ही करेंगे। हम तो केवल इतना ही कहेंगे कि सीमित अनुभव एवं सीमित स्वाध्याय के कारण शायद हम विषय के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाये हैं। लेखक इस कार्य को कभी नहीं कर पाता यदि आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी के सहृदय सदस्यगण उसे इस कार्य के लिए प्रोत्साहित न करते। विशेषतया श्री यशपाल जी आर्यबंधु, जिन्हें लेखक अपना मार्गदर्शक मानने में गौरव अनुभव करता है। अतः इन सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता-ज्ञापन करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। श्री आर्यबंधु जी ने मूल पांडुलिपि में आवश्यक संशोधन ही नहीं किए, उसे व्यवस्थित एवं सुन्दर रूप भी प्रदान किया है। मुझे यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि पुस्तक की आत्मा मेरी होते हुये भी उसका व्यवस्थित स्वरूप एवं सुन्दर कलेवर श्री आर्यबंधु जी का है। अतः मेरे लिए यह आवश्यक हो गया है कि कृतज्ञतापूर्वक उनका नाम लेखक के रूप में दूं। आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद के ३१वें वर्ष के वार्षिकोत्सव पर समाज दो लघु पुस्तकें भेंट कर रहा है। एक श्री आर्यबंधु की लिखी "ऋषि का जादू" एवं दूसरी प्रस्तुत पुस्तक। प्रस्तुत पुस्तक किसी एक भी भूले-भटके राही को सदाचार का पाठ पढ़ा सन्मार्ग दिखा सकी तो लेखक अपने श्रम को एवं आर्यसमाज अपने धन को सार्थक समझेंगा। आशा है आर्य जगत इस तुच्छ रचना को भी अपना ही लेगा।

विनीत :—

महावीर सिंह 'मुमुक्षु'

मन्त्री, आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी

मुरादाबाद।

ओ३म्

सदाचार-सुधा

समस्या और समाधान—

युग-युग से मानव सदाचार का सम्मान और दुराचार का तिरस्कार करता आया है। हम प्रतिवर्ष राम की जय-जयकार और रावण के पुतले क्यों जलाते हैं? इसीलिये न कि एक सदाचारी था और दूसरा दुराचारी। रिचटर्ड पाल एक महान ईसाई सन्त हुए हैं और नीरू एक दुष्ट प्रकृति का दुराचारी राजा। ईसाई लोग अपने बच्चों का नाम 'पाल' रखने में गौरव अनुभव करते हैं जबकि नीरू अपने कुत्तों का नाम रखने लगे हैं। ऐसा क्यों? इसी लिए कि संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति चरित्र का सम्मान करने की रही है और दुराचार का तिरस्कार करने की। पर आज स्थिति कुछ और ही है। आज चरित्र का नहीं, विद्या का भी नहीं पैसे का आदर होने लगा है। चांदी की चमक ने हमारे चर्म चक्षुओं को चुँधिया दिया है और हम आज धनाढ्य दुराचारी का तो सम्मान करने लगे हैं पर निर्धन सदाचारी की अवहेलना कर देते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि मानव की वास्तविक सम्पदा धन दौलत नही सदाचार है। क्या रावण के पास धन नहीं था, या विद्या नहीं थी? दोनों अथाह थे फिर भी वह तिरस्कृत क्यों होता है? इसीलिए न कि उसके पास चरित्र की पूंजी नहीं थी। ऐसा उच्च हमारा आदर्श था। पर आज भौतिकता की चकाचौंध में मानव अपने आदर्श को, अपनी मर्यादा को भुला बैठा है। आज वह अपनी वास्तविक सम्पदा को ठोकर मारकर ठीकरें जोड़ने में लगा है। और इसमें वह नीति-अनीति का, अच्छाई-बुराई का

कोई ध्यान नहीं रख रहा है। यही कारण है कि आज दुराचार वृद्धि पर है और सदाचार का निरन्तर लोप होता चला जा रहा है। आज चरित्र को कोई नही पूछता, धन-सम्पत्ति की सर्वत्र पूछ हो रही है।

सर्वोत्तम विरासत—

एक समय था जब लोग अपने उज्ज्वल चरित्र की सम्पत्ति अपनी सन्तान को विरासत में दे जाते थे, और ऐसा करने में अपना गौरव समझते थे। पर आज हम भौतिक धन-सम्पत्ति को सन्तान के लिए विरासत में छोड़ जाने में अपनी सफलता और सन्तान का हित समझ बैठे हैं। कितना अन्तर है हमारे पूर्वजों के सोचने में और हमारे सोचने में ? पता नहीं हम यह क्यों भूल जाते हैं कि निर्मल और उज्ज्वल चरित्र की विरासत में छोड़ी गई पूंजी सर्वश्रेष्ठ बपौती है, विरासत है कि जिसकी तुलना में भौतिक सम्पत्ति नितान्त तुच्छ एवं हेय मानी जाती है। वस्तुतः भावी सन्तान के लिए अपने उत्तम चरित्र की पूंजी विरासत में छोड़ जाना अपने जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। राजा रघु ने वचन निभाने का जो उज्ज्वल उदाहरण अपने जीवन में प्रस्तुत किया था वह उसकी भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बन गया और उसकी भावी संतति का यह आदर्श वाक्य बन गया कि—
"रघुकुल रीति सदा चली आई, प्राण जायें पर वचन न जाई।"
इसे कहते हैं चरित्र की विरासत। पर आज कहाँ है वह चरित्र कि जिस पर मानव गर्व कर सके। कहाँ है वह सदाचार जिसे कोई उदाहरण के लिए कहीं प्रस्तुत कर सके ? सर्वत्र दुराचार, अनाचार दनदना रहा है। धर्म को धर्म-निरपेक्षता ले उड़ी है और नैतिकता नदारद हो चुकी है। और स्थिति यह है कि—"नैतिकता

नाता तोड़ भगी है न जाने कहां, मानवता हाय ! आज फूट-फूट रोती है ।" आज संसार पर अधर्म और अनीति का साम्राज्य स्थापित हो चुका है कि जिसमें से धर्म और नैतिकता को निर्वासित किया जा चुका है। और स्थिति यह है कि धर्म और नीति की बात सोचना भी दुष्कर है । परिणामस्वरूप बेईमानी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, धोखा-धड़ी, लूट-पाट, मार-पीट और बलात्कार आदि का बाज़ार गर्म है। किसी को किसी पर विश्वास नहीं रहा। सभी एक दूसरे से शंकित हैं, भयभीत हैं। इस पर भी चरित्र निर्माण की किसी को भी चिन्ता नहीं। यदि किसी को चिन्ता है तो एक आर्यसमाज को। वही इसके लिए प्रयत्नशील भी है कि किसी तरह हमारा पुराना चारित्रिक गौरव लौट आये। पर क्या अश्लील फिल्में, अश्लील पुस्तकें और स्थान-स्थान पर लगे नग्न चित्र क्या हमारा पुराना चारित्रिक गौरव लौटा सकेंगे ? आज मानव का उस सीमा तक चारित्रिक पतन हो चुका है कि जिसकी कभी कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। धन के लिए बुद्धि का विनाश करने वाली शराब को सरकारी शराब के नाम पर वैधता प्रदान करना हमारी बुद्धि का दिवालियापन नहीं तो फिर क्या है? जो धन-दौलत की खातिर सिग्रेट और शराब जैसे जहर का निर्माण कर रहे हैं, वे भूल जाते हैं कि उनका अपना बेटा-बेटी भी कभी शराब पीकर उनके समस्त धन को ही नहीं घर को भी उजाड़ कर रख देंगे। जो दवा के नाम पर मिट्टी बेच रहे हैं, अथवा नकली दवायें बेच रहे हैं, क्या वे उसकी लपेट में नहीं आ सकते ? क्या उनका अपना इकलौता नौजवान बेटा इन नकली दबाओं का शिकार हो मृत्यु का ग्रास नहीं बन सकता ? जिस पुल के निर्माण में हम सीमेन्ट के स्थान पर बालू का प्रयोग कर रहे हैं, क्या हमने कभी सोचा है कि कभी हमारी अपनी ही गाड़ी उसका

शिकार बन सकती है ? जिस बाँध का सीमेन्ट लोहा हम बाज़ार में बेच आये हैं, क्या वह हमें बहा ले जाने में कोई कसर छोड़ देगा ? जिस धन के लिए हमने देश के गोपनीय तथ्य विदेशी शत्रुओं के हाथ बेच दिए हैं क्या आक्रमण के समय उनकी गोला बारी से हमारा धन सुरक्षित रह पायेगा ? धन तो दूर क्या हम स्वयं भी सुरक्षित रह पायेंगे ? चरित्र के बेचने वालो ! है कोई उत्तर इन सब प्रश्नों का आप के पास ?

मानव में छिपा दानव—

वागमती के पुल पर बनमाखी बिहार में भयंकर रेल दुर्घटना हुई। सैकड़ों व्यक्तियों पर काल की क्रूर छाया एक साथ पड़ गयी। समाचार प्राप्त हुआ कि इस भयंकर दुर्घटना के समय भी मानव का छिपा दानव उभर कर दैत्य कृत्य में तत्पर हो गया। जो यात्री बच गये थे लुटेरों ने उनका माल और धन लूट लिया। कितनों का धन लूट कर निरीह यात्रियों को उफनती नदी में फेंक दिया ताकि वे प्रतिवाद न कर सकें। जो बहते हुये शव मिले या जो निकाले गये उनके वस्त्रों में जो कुछ मिल सका लुटेरों ने वह सब भी नहीं छोड़ा। एक तो काल की वक्र दृष्टि ऊपर से मानव की क्रूरता अतः यात्रियों पर दोहरी यातनाओं की मार पड़ी। आश्चर्य तब होता है कि जब हम देखते हैं कि सुरक्षा और शान्ति व्यवस्था का उत्तरदायित्व सम्भालने वाले लोग भी या तो उदासीन खड़े देखते रहते हैं या फिर उनके सहयोगी बन जाते हैं। नगर का निवासी चतुर माना जाता है परन्तु बनमाखी में जो घृणित घटना घटी उसमें तो आस-पास के ग्रामीण लोग ही थे। लिखने का तात्पर्य केवल इतना है कि आज का मानव चरित्र की दृष्टि से इतना गिर गया है कि श्मशान की ओर जाते नरकंकाल

पर भी हाथ साफ कर सकता है। जिस देश के सदाचारी महा-पुरुषों के पास संसार भर के लोग अपने चरित्र को सुधारने के लिए आया करते थे, उसकी ऐसी दशा देखकर किसे दुःख न होगा ?

समस्या—

हमारी ऐसी दुर्दशा क्यों हुई? हमारा ऐसा पतन क्यों हुआ? हम इतना कैसे गिर गये ? उत्तर स्पष्ट है कि चरित्र को खोकर हमने सब कुछ गंवा दिया। चरित्र के अभाव में हमारी यह दुर्दशा हुई। चरित्र से पतित होने से ही हमारा पतन हुआ है। आज दुराचार दनदना रहा है, सदाचार बेचारा मुंह लटकाये कहीं सर छुपाने की जगह ढूंढ रहा है। आज चरित्र निर्माण युग की सबसे बड़ी समस्या है, सबसे बड़ी चुनौती है। पर कौन है जो इस चुनौती को स्वीकार करे ? तो क्या इस प्रश्न को यूंही छोड़ दिया जाये, इस समस्या को यूं ही लटका रहने दिया जाये। यह तो अनर्थ होगा। तो फिर इस समस्या का हल क्या है, निदान क्या है ? समस्या टेढ़ी है। दुराचार की जड़ें गहराई तक पहुँच चुकी हैं। पर जो भी हो, जैसे भी हो समाधान ढूंढना होगा। हल खोजना ही होगा। आइये ! इसका कोई समाधान ढूंढा जाये। कोई हल खोजा जाये। पर ऐसा करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि जिस सदाचार पर हम इतना बल दे रहे हैं, वह है क्या चीज़ ? और उसका विकास आवश्यक क्यों है ?

सदाचार किसे कहते हैं ?—

सदाचार का शाब्दिक अर्थ हम श्रेष्ठ आचार कह सकते हैं। पर श्रेष्ठ आचार की महत्ता क्या है? इसे हम यूं कह सकते हैं

कि जो आचरण में लाने से पूर्व भली-भांति विचार लिया जाये, वही श्रेष्ठ आचार है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है, यदि उसके कर्म विवेक पर आधारित हैं तो उन्हें सदाचार कहा जा सकता है अन्यथा उन्हें दुराचार ही कहा जायेगा। सत्य तो यह है कि मनुष्य है ही वही कि जो विचारपूर्वक कर्म करता है। निरुक्त-कार ऐसा ही मानता है। यथा–"मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्य:" अर्थात् जो विचारपूर्वक कर्म करता है वही मनुष्य है। महर्षि दयानन्द का भी ऐसा ही कथन है कि "जो विचार के बिना कर्म को न करें उनका नाम मनुष्य है।" इस प्रकार श्रीयुत यश-पाल जी आर्यबंधु के शब्दों में हम कह सकते हैं कि "जिसकी सभी चेष्टायें ज्ञान पर आधारित हैं, अर्थात् जो पहले तौलता है फिर बोलता है, पहले सोचता है फिर कार्य करता है, पहले मनन करता है फिर क्रिया में प्रवृत्त होता है, वही मानव है। कारण कि जब विचार आचार में परिणत होता है तभी सदाचार कहलाता है। दूसरे शब्दों में जब ज्ञान क्रिया में परिणत होता है तभी उसकी संज्ञा चरित्र होती है। इमर्सन ने ठीक ही कहा है कि Character is the transcription of knowledge into action. अर्थात् ज्ञान की क्रिया में परिणति का नाम ही चरित्र है।" (देखें-मानव निर्माण और आर्यसमाज, पृष्ठ १९–२०) अतः स्पष्ट है कि श्रेष्ठ आचार वही है जो ज्ञान पर आधारित है। यदि हमारा आचरण ज्ञान के विपरीत है तो उसे हम श्रेष्ठ आचार नहीं कह सकते। जब हमारी क्रियायें हमारे विवेक से नियंत्रित होती हैं, तभी उनको सदाचार कहा जाता है अन्यथा नहीं। क्योंकि जिसे हम चरित्र कहते हैं वह क्रिया में ढला हुआ संकल्प ही तो है। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि "Character is fashioned will" अर्थात् सुसंस्कृत संकल्प शक्ति का नाम ही चरित्र

है। हम तो सदाचार को मानवता का पर्याय मानते हैं। और मानवता क्या है? मानव के जो सद्गुण, सदाचरण, सद्-स्वभाव हैं, वही मानवता के द्योतक हैं। डा० राम चरण महेन्द्र के अनुसार–"सद्गुणों, सद्भावनाओं, सद्आचरणों तथा सद्व्यवहारों से युक्त पुरुषत्व का नाम मानवता है।" इसी का दूसरा नाम सदाचार है।

सरल परिभाषा—

सदाचार किसे कहते हैं ? इसे यदि सरल शब्दों में कहना हो तो हम यूं कह सकते हैं कि मनुष्य संसार के महान पुरुषों को आदर्श मानकर जब उनके बनाये मार्ग पर चलने लगता है, तो उसे सदाचार कहते हैं। क्योंकि कहा भी है कि "सतां सज्जनानां आचारः सदाचारः।" अर्थात् सत्पुरुषों सज्जनों का आचार ही सदाचार है। और "साधुनां च यथा वृत्तं एतदाचार लक्षणम्" अर्थात् सज्जनों के समान आचरण करना ही सदाचार का लक्षण है। स्पष्ट है कि सज्जनों, सत्पुरुषों, महापुरुषों के पद चिह्नों पर चलना, उनके बताये मार्ग का अनुसरण करना ही सदाचार है। यही सत्पथ है, यही अनुकरणीय पथ है। क्योंकि "महाजनों येन गतः स पन्थः" के अनुसार महापुरुष जिस मार्ग पर चले हैं, वही सदाचार का पन्थ है:–जीवन का पथ है, अनुकरणीय पथ है। संसार के महापुरुषों ने अपने पावन चरित्र से मानवता का समुज्वल इतिहास लिखा है। अतः महापुरुषों का मर्यादित आचरण हमारे लिये अनुकरणीय है। पर महापुरुष की पहचान क्या है ? इसके लिये स्वेट मार्डन एक स्थान पर लिखते हैं कि "जो धन के लिये अपनी आत्मा का घृणित सौदा नहीं करते, जिनके रोम-रोम में ईमानदारी भरी हुई है, जो सत्य को प्रकट करने में बड़ी से

बड़ी शक्ति के सामने नहीं झुकते, कठिन कार्यों को देखकर हिचकते नहीं जो अपने नाम का ढिढोरा न पीटते हुए भी साहसपूर्वक काम करते जाते हैं। मेरी दृष्टि में वे ही महापुरुष हैं।" वस्तुतः जिनमें समस्त मानवीय सद्गुण हों जो मर्यादित जीवन वाले हों जो अपने विवेक पर वासना का आधिपत्य न जमने दें वे ही महापुरुष हैं। तात्पर्य यह कि समस्त सद्गुणों, सद्भावनाओं, सदाचरणों, सद्व्यवहारों, सद्स्वभावों, सद्सामर्थ्यों आदि से सम्पन्न व्यक्ति ही महापुरुष है। उनके पदचिह्नों पर चलना सदाचार है।

चारित्रिक उत्थान की आवश्यकता क्यों है ?

यह इस लिए कि "आचारः परमोधर्मः । आचारहीनः पशुभिः समानः" के अनुसार आचार ही परम धर्म है और आचार हीन मनुष्य पशु के समान है। आचार मानवता का शृंगार है। यह उसकी पूंजी है। यह मानवता का आधार है। "आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम् । आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम् ।" अर्थात् मनुष्य आचार से ही आयु प्राप्त करता है, आचार से ही सम्पत्ति प्राप्त करता है, आचार से कीर्ति प्राप्त करता है। आचार ही सर्वश्रेष्ठ धन है। जो व्यक्ति अपने आचार की चिन्ता करता है, कीर्ति स्वयं उसकी चिन्ता करने लगती है। अर्थात् चरित्रवान् व्यक्ति को कीर्ति के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं पड़ती। कीर्ति स्वयं ही छाया की तरह सदा उसके साथ रहती है। विपरीत इसके जो अपने चरित्र की चिन्ता नहीं करता वह सर्वत्र निन्दा का पात्र बनता है। कहा भी है—"दुराचारी हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः । दुःख भागी च सततं व्याधिताऽल्पायुरेवच ।" अर्थात् दुराचारी मनुष्य संसार में निन्दा

का पात्र होता है। वह हमेशा दुःख का भागी, रोगी तथा अल्पायु वाला होता है। इसी लिये कहा गया है कि–"वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च। अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्तस्तु हतो हतः।" अर्थात् मनुष्य चरित्र की यत्नपूर्वक रक्षा करे। धन तो आता है और चला जाता है। धन से क्षीण व्यक्ति क्षीण नहीं है परन्तु चरित्र से हत तो मृत के तुल्य है। मानव जीवन में केवल सच्चरित्रता ही एक ऐसी वस्तु है कि जिसकी रक्षा हमें हर मूल्य पर करनी चाहिये। कहा जाता है कि धन और स्वास्थ्य के ह्रास से अधिक प्रभाव नहीं पड़ता पर चरित्र के ह्रास से सर्वनाश हो जाता है। सचरित्रता मानव का सर्वस्व है अतः उसका उत्थान परम धर्म और परम कर्त्तव्य है। यदि हमने चरित्र का विनाश होने दिया तो मानवना का ही विनाश हो जायेगा। और यदि हमने चरित्र की ओर ध्यान दिया तो मानवता जी उठेगी। यदि मानव ने भय, शंका और शोषण आदि से मुक्ति पानी है तो उसे चारित्रिक उत्थान की ओर ध्यान देना ही होगा। मानव नैतिकता के जिस पाठ को भूल चुका है, उसे फिर से याद करने की आवश्यकता है। यह इसलिए कि नैतिकता हमें उचित-अनुचित और अच्छे-बुरे का ज्ञान कराकर हमारे कार्यों और व्यवहारों को नियंत्रित करती है। यदि हम धरा को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो सदाचार–सुधा का पान करना ही होगा। अतः मानव के चारित्रिक उत्थान की आवश्यकता स्वयंसिद्ध है।

समस्या का समाधान—

पूर्व के पृष्ठों में हमने युग की प्रबलतम समस्या चरित्र–निर्माण को उजागर किया है। अब हम इसके समाधान की ओर

बढ़ते हैं। समस्या विकट है अतः समाधान सरल नहीं। जब व्यक्ति अपने सर्व प्रमुख सद्‌गुण सदाचार को ही भूल बैठा हो और समाज तथा राष्ट्र के कर्णधारों को इस की तनिक भी चिन्ता न हो तो फिर चरित्र का निर्माण कैसे हो सकता है? समस्या का समाधान कैसे हो सकता है ? अतः आर्यसमाज, समाज और राष्ट्र के कर्णधारों से बलपूर्वक यह कहना चाहता है कि वे सदाचार की उपेक्षा की दूषित मनोवृत्ति को अविलम्ब त्यागें। इसी में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का कल्याण है और यदि ऐसा न किया गया तो मानवता के विनाश को कोई बचा नहीं सकेगा। हम यह मानते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के इन वर्षों में हमने बहुत कुछ पाया है पर हमें यह लिखने में भी कोई संकोच नहीं कि चरित्र अथवा अध्यात्म के क्षेत्र में हमने बहुत कुछ खो भी दिया है। हम यह तो नहीं कहते कि भौतिक उन्नति की कोई आवश्यकता नहीं है, पर इतना अवश्य कहना चाहते हैं कि अध्यात्म को खो कर भौतिक उन्नति हमारे उत्थान नहीं, पतन का कारण बनेगी। वह उन्नति किस काम की जिसमें अपनी आत्मा ही खो जाये ? अतः भौतिक उन्नति से अधिक मानव की आत्मिक उन्नति की आवश्यकता है। बिना आत्मिक उन्नति के चारित्रिक उत्थान की बात सोची ही नहीं जा सकती। आज हम भौतिक सुख साधनों के जुटाने हेतु योजना पर योजना बना रहे हैं। पर कहां है वह मानव जिसके लिए हम यह सब सुख साधन जुटा रहे हैं ? यदि उसमें सच्चिरित्रता की सुगंधि नहीं तो वह कहने को ही मानव है। क्या हमने मानव के सद्‌गुण सच्चरित्रता के विकास के लिए भी कभी कोई योजना बनाई है ? यदि नहीं तो फिर नैतिकता के अभाव में हमारी योजनाओं का क्या होगा ? यह भोग-ऐश्वर्य सभी हमारी अनीति का शिकार हो जायेंगे। अतः

हम सशक्त स्वरों में यह कहना चाहते हैं कि—

नया विश्व निर्माण करने से पहले,
मानव को मानव बनाना पड़ेगा।
सुख–साज सारे सजाने से पहले,
मानव का दानव भगाना पड़ेगा॥

अन्यथा मानव में छुपी दानवता इस सुख–साधनों को ध्वस्त कर के रख देगी।

चरित्र निर्माण कैसे होता है ?

चरित्र जिसे अंग्रेजी में कैरेक्टर कहते है, हमारी आदतों का पंजीकृत स्वरूप है। आदतें मनुष्य की आधार होती हैं। जैसी आदतें होंगी वैसा ही उसका चरित्र भी होगा। मनुष्य के जीवन का विकास अथवा ह्रास उसकी अपनी आदतों पर ही निर्भर होता है। हमारी अपनी आदतें हमारे चरित्र और स्वभाव का निर्माण किया करती हैं। जब हम किसी भी ऐच्छिक कार्य को बार-बार करते हैं तब वह हमारी आदत में बदल जाया करता है। आदत बन जाने पर वही ऐच्छिक कार्य अनिच्छा पूर्वक यंत्र-वत् स्वतः ही होने लग जाता है। हमें पता भी नहीं चलता और हम उस आदत के वशीभूत होकर वैसा कर्म कर बैठते हैं। हम अपनी आदतों को स्वयं डालते हैं, पर आदत पड़ जाने पर हम उसके आधीन हो जाते हैं और तब उसका छूटना कठिन हो जाता है।

फिर छुटकारा कैसे हो ?

यह ठीक है कि पड़ी आदतों का छुटाना कठिन हुआ करता है। परन्तु यह नहीं कि हम उन्हें छोड़ ही नहीं सकते। यदि हम

सच्चे मन से प्रयत्न करें तो आदत छूट सकती है। पर इसके लिए दृढ़ संकल्प, सतत अभ्यास, सत्संग, विवेक और वैराग्य की आवश्यकता होती है। तीव्र इच्छा शक्ति हमारी आदतों को बदलने में बड़ी सहायक होती है। तीव्र इच्छा शक्ति से आदत तो क्या हम अपने सम्पूर्ण शरीर को ही नये सांचे में ढाल सकते हैं। बुरी आदतों को छोड़ने के लिए हमें अपनी इन्द्रियों और मन को वश में रखना होगा और आत्म-निरीक्षण का सहारा लेना होगा। इन उपायों का निष्ठापूर्वक अनुष्ठान करने से हम अपनी आदतों को बदल सकते हैं।

चरित्र निर्माण के उपाय—

चरित्र के निर्माण के लिए हमें अपनी आदतों का सुधार करना होगा। और साथ ही यह भी देखना होगा कि कोई बुरी आदत हममें न पड़े। हमें अपने संस्कारों पर दृष्टि डालनी पड़ेगी और देखना होगा कि हम कहीं बुरे संस्कारों का संग्रह तो नहीं कर रहे, विशेष रूप से शैशव काल में। शैशव काल की प्रत्येक घटना शिशु-चरित्र की दिशा सूचक बन जाती है। कच्ची मिट्टी से ही घड़ा बना करता है पक्की से नहीं। इसी प्रकार शैशवकाल में ही संस्कार अधिक प्रभावशाली ढंग से डाले जा सकते हैं। शैशवकाल के संस्कार बच्चे के लिये दिशा-सूचक बन जाते हैं इसी लिए मानव जीवन के लिए निर्धारित सोलह संस्कारों में से अधिकांश बचपन में ही सम्पन्न करा दिए जाते हैं। जब बालक छोटा होता है तो उसके माता-पिता एवं अन्य कुटुम्बी जन इस बात का ध्यान रखें कि बालक में अच्छे संस्कार ही पड़ें बुरे नहीं। पर जब वह बड़ा हो जाये तो इसके लिए उसे स्वयं प्रयत्न करना होगा। उसे आत्म-निरीक्षण करना होगा और अपने कर्मों की पड़ताल करनी होगी

क्योंकि कर्म ही एकमात्र वह आईना है कि जो हमें हमारे स्वरूप को यथार्थ में दिखाने में समर्थ हो सकता है। आत्म-निरीक्षण, चरित्र-निर्माण का सर्वोत्तम साधन है। हमें अपनी इन्द्रियों और मन की चंचलता पर नियन्त्रण रखना होगा। हमारी इन्द्रियां बहिर्मुखी होने के कारण विषयों की ओर भागती हैं। वे अपनी तृप्ति चाहती हैं। शरीर सुख चाहता है और चचल मन न जाने किन-किन वस्तुओं की कामना में हमें उलझाये रखता है। अपने चरित्र के निर्माण हेतु हमें इन सब से लोहा लेना पड़ता है। अतः सदाचार एवं चरित्र-निर्माण के लिए इन्द्रिय-निग्रह और मन पर नियंत्रण करना परम आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने मनु के आधार पर निर्देश दिया है कि—"जैसे विद्वान् सारथि घोड़ों को नियम में रखता है वैसे मन और आत्मा को खोटे कामों में खैंचने वाले विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों के निग्रह में प्रयत्न सब प्रकार से करे। क्योंकि जीवात्मा इन्द्रियों के वश होके बड़े-बड़े दोषों को प्राप्त होता है।" स्पष्ट है कि उलटे मार्ग पर जाने वाली इन्द्रियों को वश में रखकर धर्म के मार्ग पर ले जाने से ही हम चरित्रवान् सदाचारी हो सकते हैं। चरित्र निर्माण के लिए सत्-असत्, शुभ-अशुभ और उचित-अनुचित का विवेक जागृत करना होगा। और यह विवेक बिना सत्संग, स्वाध्याय, सुशिक्षा और सद्ज्ञान के प्राप्त नहीं होता। अतः विवेकी बनने के लिए हमें सत्संग स्वाध्याय आदि का अनुष्ठान करना आवश्यक है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम अपनी आत्मा में उठने वाले उन संकेतों को सुनें कि जो बुरे कर्म करते समय भय, शंका और लज्जा के रूप में उठा करते हैं। यदि हम उन संकेतों की अवहेलना कर देंगे तो चरित्र को कदापि नहीं सुधार सकते। अतः चरित्र निर्माण के लिए इन संकेतों का अनुपालन आवश्यक है। चरित्र निर्माण के लिए शाश्वत

धर्म जिसे हम मानव धर्म कह सकते हैं का अनुपालन आवश्यक है। बिना धर्म के चरित्र की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

धार्मिक आस्थायें और चरित्र—

चरित्र निर्माण के लिए हमें अपनी धार्मिक आस्थाओं की भी पड़ताल करनी पड़ेगी। क्योंकि धार्मिक आस्थायें हमारे चरित्र को अत्याधिक प्रभावित किया करती हैं। उदाहरण के लिये पाप क्षमा होने की बात ही ले लीजिये। जब हमारी यह आस्था होगी कि चाहे कितने ही पाप क्यों न किये जायें, किसी पैगम्बर पर ईमान लाने से, तौबा करने से, गंगा स्नान या तीर्थाटन से वे क्षमा हो सकते हैं तो फिर व्यक्ति पापों से विरक्त ही क्यों होने लगा। विपरीत इसके जब हमारी धार्मिक आस्था ईश्वर की यथार्थ कर्म-फल व्यवस्था को स्वीकारेगी और हम यह विचारेंगे कि पापों को तो हर हालत में भोगना ही पड़ेगा, और कर्म-फल भोग से हमें कोई नहीं बचा सकता तो व्यक्ति पापों से अवश्य बच सकता है। इसी प्रकार ईश्वर की सर्वव्यापकता को भी लिया जा सकता है। जब हमारी धार्मिक आस्था ईश्वर को एकदेशीय मानने की होगी तो हम उस-उस देश अथवा स्थान पर भले ही पाप कर्म न करें पर अन्यत्र करते फिरेंगे। मन्दिर, मस्जिद को खुदा का घर मानने वाले वहां पर पाप कर्म करने से इसीलिए कतराते हैं न कि वह खुदा का घर है। यदि हमारी धार्मिक आस्था में परिवर्तन आ जाये और हम संसार के हर स्थान को खुदा का घर मानने लग जायें तो फिर पाप कर्म करने के लिये स्थान ही कहाँ रह जाता है। अतः सिद्ध है कि धार्मिक आस्थायें चरित्र निर्माण में सहायक

होती हैं, जबकि वे वेदानुकूल होती हैं। अन्यथा अवैदिक मान्यताओं से चारित्रिक ह्रास ही होता है।

मनोरंजन के साधन और चरित्र—

चरित्र निर्माण और मनोरंजन के साधनों का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अतः हमें अपने मनोरंजन के साधनों पर भी ध्यान देना होगा। आज हमने अपने मनोरंजन के जो साधन अपना रखे हैं, वे इतने निकृष्ट हैं कि हमारे चरित्र का सत्यानाश किये जा रहे हैं। भला इस से बढ़कर और मूर्खता क्या हो सकती है कि अपनी जेब से पैसा खर्च कर के हम अपने चरित्र को बिगाड़ रहे हैं। गन्दी फिल्में, गन्दा साहित्य, गन्दे पोस्टर, गन्दा फैशन, गन्दे खेल, गन्दे रीति-रिवाज हमारे चरित्र को बिगाड़ने के साधन नहीं तो और क्या है ? यदि हम सदाचारी रहना चाहते हैं तो हमें इन सब पर उचित नियन्त्रण रखना होगा। हमें अपने समय का सदुपयोग करना होगा क्योंकि निठल्ला मन शैतान का घर होता है।

चरित्र निर्माण का उत्तरदायित्व—

ऊपर हमने चरित्र निर्माण के कतिपय उपायों का वर्णन किया है। इन साधनों का यदि उचित रूप से उपयोग किया जाये तो हमारा विश्वास है कि चरित्र निर्माण की समस्या का समाधान हो सकता है। पर इसका उत्तरदायित्व कौन ले ? हमारी दृष्टि में चरित्र-निर्माण का सर्वप्रमुख उत्तरदायित्व स्वयं हमारा (व्यक्ति इकाई रूप में) है। हमारा विश्वास है कि हम सुधरेंगे तो जग सुधर जायेगा। कोई हम पर सदाचार बलात् तो थोप नहीं सकता यदि हम ही न सुधरना चाहें तो फिर हमें कोई भी सुधार नहीं

सकता। अतः चरित्र निर्माण का प्रथम पग हमारा अपना होगा। हमें स्वयं इसके लिये उद्योग करना होगा तभी समस्या का समाधान हो सकता है। यदि व्यक्ति, परिवार, समाज़, विद्यालय और राष्ट्र अपने-अपने कर्त्तव्यों को निभाते चलेंगे तो फिर चरित्र-निर्माण जो आज के युग की प्रबलतम समस्या मानी जाती है, कोई समस्या नहीं रहेगी। यदि समाज में सदाचारियों का सम्मान होगा तो सदाचार जी उठेगा। यदि हम चारित्रिक मूल्यों की ओर समुचित ध्यान देंगे तो मानव सच्चरित्र बन जायेगा। अन्यथा जो दशा है एवं आगे होने जा रही है, उसका भगवान ही रक्षक है।

बिषय का उपसंहार करते हुये अन्त में हम यही कहेंगे कि चरित्र मानव की सर्वोत्कृष्ट पूंजी है। यह उसका सर्वस्व है। अतः इस पूंजी की यत्नपूर्वक रक्षा करना मानव मात्र का परम धर्म और पुनीत कर्म है। यह ऐसा धन है कि जिसके उपार्जन के लिये हमें स्वयं ही पुरुषार्थ करना होता है। अन्य सम्पत्तियां तो किसी भाग्यवान् को बिना पुरुषार्थ के केवल भाग्य से भी मिल जाया करती हैं किन्तु यह ऐसी सम्पत्ति है कि जो भाग्य से नहीं, पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। तो आइये! शेष बचे जीवन के क्षणों में हम सदाचार की अमूल्य पूंजी को बटोरने में जुट जायें और अपने आचरण से सदाचार की सुगंधि बखेरते चलें। यदि हम ऐसा कर सके तो निश्चय ही धरा स्वर्ग बन जायेगी और मानवता जी उठेगी।

ओ३म् शम् ❀❀

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद का

३९वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक १, २ तथा ३ नवम्बर १९८१

आमन्त्रित विद्वान् :

शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्ति प्रकाश जी

पूज्य स्वामी सुकर्मानन्द जी महाराज

धर्माधिकारी आचार्य रामानन्द जी शास्त्री, पटना

वेदवक्ता डा० रामप्रसाद जी वेदालंकार, अचार्य
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, हरिद्वार

ओजस्वी गायक श्री बृजपाल शर्मा कर्मठ तथा श्री सत्यपाल जी

सुमधुर गायक श्री गोविन्द सिंह जी

आर्य भजनोपदेशक श्री धर्म राज सिंह जी

प्रतियोगिता :

२५ अक्तूबर १९८१

भाषण : विषय–धर्म निरपेक्षता धर्महीनता नहीं।

निबन्ध : विषय–वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज का दायित्व

सुगम संगीत प्रतियोगिता

वेद प्रचार सप्ताह— .

इस वर्ष दिनांक १५ अगस्त ८१ श्रावणी से २३ अगस्त ८१ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक आर्य समाज में वेदवक्ता श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी, (११/२ बलकेश्वर कालोनी, आगरा) की भव्य वेद कथा का आयोजन किया गया।

हमारे प्रकाशन

१—प्रभु है भी ?	साहित्याचार्य बलदेव जी अग्निहोत्री
२—कर्म फल प्रश्नोत्तरी	श्री यशपाल आर्यबन्धु
३—मृत्यु और उसका भय	,, ,,
४—सत्यार्थ प्रकाश दिग्दर्शन	,, ,,
५—मुझे आर्य समाज क्यों प्रिय है ?	,, ,,
६—विश्व को आर्य समाज की देन	,, ,,
७—मानव निर्माण और आर्य समाज	,, ,,
८—आर्य समाज ही क्यों ?	,, ,,
९—क्रान्तिदूत दयानन्द	,, ,,
१०—ऋषि का जादू	,, ,,
११—सुमन संचय	,, ,,
१२—प्रार्थना विज्ञान	,, ,,
१३—सदाचार सुधा	श्री महावीर सिंह 'मुमुक्षु'

मूल्य : केवल सहयोग

हमारे आगामी प्रकाशन

१—आर्य समाज क्या चाहता है ?
२—आर्य समाज स्थापना का उद्देश्य
३—भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और आर्य सजाज
४—धर्म और विज्ञान

प्राप्ति स्थान :

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद

हमारे प्रकाश

१—प्रभु है भी ? साहित्याचार्य

२—कर्म फल प्रश्नोत्तरी

३—मृत्यु और उसका भय

४—सत्यार्थ प्रकाशक दिग्दर्शन

५—मुझे आर्य समाज क्यों प्रिय है ?

६—विश्व को आर्य समाज की देन

७—मानव निर्माण और आर्य समाज

८—आर्य समाज ही क्यों ?

९—क्रान्तिदूत दयानन्द ,, ,,

१०—ऋषि का जादू ,, ,,

११—सुमन संचय ,, ,,

१२—प्रार्थना विज्ञान

१३—सदाचार सुधा श्री महावीर सिंह 'मुमुक्षु'

मूल्य : केवल सहयोग

हमारे आगामी प्रकाशन

१—आर्य समाज क्या चाहता है ?

२—आर्य समाज स्थापना का उद्देश्य

३—भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और और आर्य समाज

४—धर्म और विज्ञान

प्राप्ति स्थान :

आर्य समाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद